

(4) शैक्षिक उपलब्धि का वांछित स्तर बनाये रखने की आवश्यकता

(To maintain Appropriate level of the Achievement)

विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों अपने उपलब्धि 3 स्तर को बनाये रखने अथवा उस स्तर में वृद्धि करने की दृष्टि से भी निर्देशन का लाभ सकते हैं। वांछित शैक्षिक स्तर को तभी बनाए रखा जा सकता है जब छात्र सहज एवं स्वाभाविक रूप से अधिगम कर सकें। निर्देशन प्रक्रिया के द्वारा छात्रों के उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है। तथा उन्हें यह बताया जा सकता है कि वे किन कारणों से असतोषजनक उपलब्धि करने में सफल नहीं हो पा रहे हैं अथवा अधिगम से सम्बन्धित अपनी किन विशेषताओं को उनको बनाए रखना चाहिये।

निर्देशन के माध्यम से अधिगम की सहज प्रक्रियाएँ तथा सीखने के स्वाभाविक युक्तियाँ से छात्रों को परिचित कराया जा सकता है। इसके साथ ही छात्रों की रुचि एवं ध्यान को विकसित करके अधिगम प्रक्रिया को सहज बनाये में निर्देशन सह होता है।

सामाजिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता (Necessity of Guidance from the Standpoint of Society)

हमारे समाज को निरन्तर प्रगति की दिशा में अग्रसरित करते हुए शान्ति एवं सुरक्षा का वातावरण बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि समाज में ऐसे नागरिकों का विकास किया जाय जो समाज की आवश्यकता एवं महत्व से परिचित हो तथा समाज के साथ समायोजन करते हुए अपना योगदान दे सकें। यह तभी सम्भव है जब प्रत्येक व्यक्ति निम्न समाज की उपादेयता का ज्ञान करे, जब वह समाज के स्वरूप एवं समाज में होने वाले परिवर्तनों से अवगत रहे तथा समाज में उत्पन्न समस्याओं के समाधान में अपना योगदान दे सकें। व्यक्ति को समाज के सन्दर्भ में उपरोक्त एवं अन्य अनेक भूमिकाओं का निर्वहण करने में निर्देशन का सार्थक उपयोग किया जा सकता है। इस दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता निम्नलिखित है जो समाज में अनेक समस्याओं के रूप में परिलक्षित होती हैं। इसे निर्देशन के माध्यम से खत्म या कम करने का प्रयास किया जा सकता है।

(1) समुचित रखावनापन का महत्व (Importance of Proper Placement)

हरे व्यक्ति की क्षमता एवं योग्यता के अनुरूप कार्य के अवसर प्राप्त होने का व्यक्ति एवं समाज के महत्व एवं शान्ति, क्षमता इसको योग्यता एवं सुरक्षा में गहन सम्बन्ध है।

प्रगतिशील देशों का प्रमुख कारण है कि वहाँ मानवीय क्षमताओं के समुचित उपयोग पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है। भारत देश में उचित नियोजन का सर्वाधिक अभाव रहा है।

उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त ही भी हमारे देश के अनेक प्रतिभाशाली छात्र रोजगार के लिए कई-कई वर्ष तक भटकते रहते हैं। इस दृष्टि से विदेशी छात्र भी भाग्यशाली हैं जिन्हें रोजगार प्राप्त होवे तक बेरोजगार भत्ता प्राप्त होता है।

अथवा यथा समय अभिवृद्धि के अनुरूप रोजगार प्राप्त हो जाता है। हमारे यहाँ व्यक्ति की योग्यता एवं शिक्षा का केवल अपमान करने का ही वातावरण उत्पन्न किया जाता है। यही कारण है कि देश में असामाजिक विचारधाराओं एवं असामाजिक कृत्यों का विस्तार हो रहा है।

(2) महिलाओं के व्यावसायिक समायोजन (For the Vocational Adjustment of Women)

→ भारतीय संविधान के अनुसार स्त्रियों एवं पुरुषों को विकास एवं प्रगति के समान अवसर प्रदान किये जाने की घोषणा के उपरान्त व्यावसायिक जगत में स्त्रियों के प्रवेश की संख्या बढ़ी है।

उच्चतर शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्राप्त करके, शांति और गांधी की महिलाएं भात अनेक व्यवसायों में कार्य कर रही हैं। शिक्षा, उद्योग, पुलिस सेना, उद्बुधन, आदि विविध क्षेत्रों में उनकी भागीदारी निःसन्देह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

परिवारों की आर्थिक स्थिति और महिला की स्वतन्त्रता पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा परन्तु इसके साथ ही अनेक समस्याएँ नारी जीवन में उत्पन्न हुई हैं।

बालकों का समुचित पालन पोषण एवं परिवार तनावों में वृद्धि इन समस्याओं के अन्तर्गत विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसके साथ ही माँ की संख्या में भी पर्याप्त वृद्धि हुई है।

समाज का संकीर्ण विचारधारा पर आधारित आज भी किसी व्यवसाय में कार्य करने वाली महिला को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। उन स्थानों पर जहाँ उनके पुरुष कर्मियों के समान ही महिला अथवा महिलाओं की अल्पसंख्यक कार्य करती हैं।